सामाजवादी आन्दोलन में आचार्य नरेन्द्र देव की भूमिका :

डॉ0 रवीन्द्र कुमार राय
इतिहास विभाग
भू0 ना0 मं0 वि0 वि0 मधेपुरा (बिहार)

सारांष :

एक शिक्षाविद्, राजनेता, चिंतक और समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव का भारत के समाजवादी चिंतकों में अग्रणी स्थान है। आचार्य जी ने अन्य भारतीय समाजवादियों से अलग परन्तु उसी तारतम्यता में समाजवाद को एक दशा और दिशा प्रदान किया । मार्क्सवाद एवं बौद्धिकवाद के प्रखर अध्येता आचार्य नरेन्द्र देव के चिन्तन में कृषकों, श्रमिकों और कमजोर वर्ग के लोगों के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है ।

आचार्य जी ने मार्क्स, एंगल्स लेनिन, रोजा लग्जेम्बर्ग और कार्ल काउट्स्की के विचारों का गहन अध्ययन किया और मार्क्सवादी हो गए । किन्तु वे मार्क्स के अन्धभक्त नहीं थे वे मार्क्स को एक समाज विज्ञानी के रूप में मानते थे । उनकी दृष्टि में मार्क्सवाद समाजिक विश्लेषण और सामाजिक परिवर्तन का शास्त्र है ।

आचार्य नरेन्द्र देव मार्क्सवादी थे और जीवन पर्यन्त मार्क्सवाद के निष्ठावान शिष्य बने रहे, उसका विकास करते रहे, उसकी मीमांसा करते रहे और उसकी औचित्य सिद्ध करते रहे। जब सर्वोदय अथवा भूदान आंदोलन की गंगा इस देश में बही और मार्क्सवाद के अनन्यत्तम शिष्य जयप्रकाश नारायण भी इस ओर मुड़ गए, नरेन्द्र देव को किंचित मात्र भी अपनी मार्क्सवादी निष्ठा से डिगते नहीं देखा गया बल्कि सोशलिस्ट पार्टी के क्रियाकलापों को विशुद्धतः मार्क्सवादी सिद्ध कर उन्होंने आलोचकों के मुँह बन्द कर दिए । आचार्य जी का मार्क्सवाद रूसी कम्युनिज्म का सहचर नहीं था। एक तो उन्होंने उत्ताद राष्ट्रीयता और समाजवाद के समन्वय पर जोड़ देकर और उत्तरदायी व्यापक राष्ट्रीयता को समाजवाद का अंग बनाकर मार्क्सवाद की एक बड़ी समस्या का समाधान किया, दूसरे उन्होंने कृषि क्रांति के लिए मजदूरों और किसानों के संयुक्त मोर्चा की जरूरत बताकर तथा समता के आधार पर किसानों और मजदूरों के पारस्परिक सम्बन्ध को कायम करने का पाठ पढ़ाकर मार्क्सवाद की दूसरी बड़ी समस्या का समाधान किया । उन्होंने जनतांत्रिक विकेन्द्रीकरण औद्योगिक जनतंत्र और अर्द्ध स्वतंत्र कारपोरेशनों द्वारा समाजीकृत उद्योगों की व्यवस्था के सिद्धांतों का मार्क्सवाद में प्रवेश कर उसे व्यापक और जनतांत्रिक रूप प्रदान किया और जनतांत्रिक केन्द्रवाद के सर्वसत्तावाद और केन्द्रित नौकरवाद से उसकी रक्षा की । राज्य में जनतांत्रिक भावनाओं को जागृत, सुदृढ़ और व्यापक बताते हुए जनतांत्रिक उपायों से जिसमें सत्याग्रह और हड़ताल भी शामिल हो, समाजवादी समाज बनाने पर जोर देकर उन्होंने मार्क्सवाद के जनतांत्रिक स्वरूप को निखारा और पुष्ट किया और उसे व्यक्ति पूजा और दल अधिनायकत्व द्वारा विकृत किए जाने से बचाया ।

आचार्य जी ने समाजवादी संस्कृति के कतिपय मूल तत्व की व्याख्या कर और उसे समाजवादी समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण अंग बनाकर उन्होंने मार्क्सवाद के सांस्कृतिक लक्ष्य की अभिवृद्धि की । आचार्य जी का कथन था, 'मार्क्सवाद कोई अटल सिद्धांत नहीं है । जीवन की गति के साथ–साथ यह भी बदलता है । इसकी विशेषता इसका क्रांतिकारी होना है । उन्होंने कार्लमार्क्स के मानवतावादी तत्वों और जनवादी तत्वों को पोषित एवं पाल्लवित किया । समाजवादी नेता प्रेम भसीन का विचार है कि आचार्य नरेन्द्र देव के लिए मार्क्सवाद कभी भी एक सिद्धांत नहीं रहा । उनके लिए यह एकमात्र गति के लिए पथ निर्देशक रहा और मार्क्सवाद की आत्मा और अनिवार्य वस्तु से निर्देशित होते रहे । आचार्य नरेन्द्र देव के लिए मार्क्सवाद एक विज्ञान था और यह रोमांचवाद का पूर्णतः विरोधी था । आचार्य जी समाजवाद के नवीनतम संस्कार के अनुयायी थे जो कि बौद्धिक रूप में कार्ल मार्क्स की पुस्तकों में विराजमान है और व्यवहार रूप में लेनिन की सृष्टि में सम्भवतः दीख पड़ता है । किन्तु वास्तविकता यह है कि उनका दर्शन मूलतः मार्क्सवादी है और कार्यप्रणाली में मार्क्स–लेमिन की पुट है ।

मूल शब्द :– समाजवाद, नैतिकता, सत्याग्रह, वैज्ञानिक समाजवाद, मार्क्सवाद, लोकतांत्रितक समाजवाद

आचार्य जी के समाजवादी आन्दोलन के लक्ष्य :–

समाजवाद का ध्येय वर्गविहीन समाज की स्थापना है । आचार्य जी का समाजवाद प्रचलित समाज का इस प्रकार संगठन करना चाहता है कि वर्त्तमान परस्पर विरोधी स्वार्थोवाले शोषक और शोषित, पीड़क और पीड़ित वर्गो का अंत हो जाए, वह सहयोग के आधार पर संगठित व्यक्तियों का एक ऐसा समूह बन जाए जिसमें एक सदस्य की उन्नति का अर्थ स्वभावतः दूसरे सदस्य की उन्नति हो और वह मिलकर सामूहिक रूप से परस्पर उन्नति करते हुए जीवन व्यतित कर सके । समाजवाद संसार को आजाद करना चाहता है, व्यक्तित्व के विकास में रूकावट डालने वाले सामाजिक बंधनों से उसे छुटकारा दिलाना चाहता है । शोषण मुक्त समाज की रचना करके, मौजूदा समाज की प्रचलित दास्ता, विषमता और असहिष्णुता को सदा के लिए दूर करके समाजवाद, स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व की वास्तविक स्थापना करना चाहता है । आचार्य जी का मानना था कि समाजवादी का साध्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो परस्पर विरोधी एवं शोषित आर्थिक वर्ग विहीन हो और जो सहयोग के आधार पर संगठित मानवों का सच्चा लोकतंत्र बने । समाजवाद पूर्ण लोकतंत्र को पुष्ट करता है । आचार्य जी के समाजवाद का लक्ष्य विश्व स्वतंत्रता है । वह व्यक्तित्व विकास के मार्ग में अवरोधक सामाजिक बंधनों से उसे मुक्त करना चाहता है। समाजवाद शोषण विहीन सामज का निर्माण कर वर्तमान समाज के दासत्व, वैषम्य और असहिष्णुता का सदैव के लिए उन्मूलन कर स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व भावना को वस्तुतः प्रतिष्ठित करना चाहता है । आचार्य जी की दृष्टि में समाजवाद अन्तोगत्वा वर्ग विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है । वह अस्तित्वपूर्ण समाज के ढ़ाँचे को इस प्रकार निर्मित करना चाहता है जिसमें शोषक एवं शोषित, उत्पीड़क एवं उत्पीड़ित वर्गों का मूलतः अन्त हो जाय और वह सहयोग पर आधारित संगठित मानवों का ऐसा समाज बन जाए जहाँ एक की प्रगति का अर्थ सभी की प्रगति हो और सभी सामूहिक रूप से प्रगति करते हुए अपना जीवन यापन कर सकें।

आचार्य जी के सामाजिक आन्दोलन का मूलाधार – मानवता :–

आचार्य नरेन्द्र देव के लिए मानवता ही समाजवाद का आधार है । समाजवाद आर्थिक स्वतंत्रता के साथ–साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर भी पुरजोर बल देता है । उनके अनुसार व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास समाजवादी समाज में ही हो सकता है । समाजवाद मानव स्वतंत्रता की कुँजी है। एक स्वच्छन्द समाज में सम्पूर्ण स्वतंत्र मानवत्व की प्रतिष्ठा समाजवाद के द्वारा ही हो सकता है । समाजवाद ही एक सुन्दर, सशक्त मानव संस्कृति का, जिसका आधार स्वच्छन्दता, समानता एवं बंधुत्व हो निर्मित कर सकता है । आचार्य नरेन्द्र देव ने यह स्वीकार किया था कि समाजवाद द्वारा प्रत्येक प्रकार की समानता स्थापित नहीं हो सकती, जिनका ऐसा विश्वास है यह उनकी भूल होगी । समाजवाद पूर्ण समानता प्रतिष्ठित किए जाने का दावा नहीं करता । समाजवादी समाज के सदस्यों में बौद्धिक एवं शारीरिक विभेद रहेगा । आचार्य जी का कथन है कि समाज के भीतर विभिन्न कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए श्रम विभाजन मौजूद रहेगा और फलस्वरूप अनेक पेशे भी होंगे । समाजवाद जिस नई सामाजिक व्यवस्था की कल्पना करता है उसमें आजकल की भाँति भीषण आर्थिक विषमताएँ न पाई जाएगी किन्तु इसका अभिप्राय यह नही है कि समाजवाद सार्थक एकरूपता स्थापित करना चाहता है । समाजवादी समाज में पूर्ण एकरूपता तथा पूर्ण समाज लाने का वायदा नहीं किया जा सकता । समाजवादी यह अवष्य करेगा कि शोषक वर्ग का अन्त करके असमानता का आर्थिक आधार नष्ट कर देगा और सबको अवसर की समानता प्रदान करेगा । सामजवाद का आदर्श हर व्यक्ति से उसकी योग्यतानुसार काम लेकर उसकी आवश्यकतानुसार उपभोग की वस्तुओं का प्रबन्ध करना है । मार्क्स ने कहा था कि ''मानव समाज का उद्धार सामाजिक शक्तियों के ऐसे नवीन संगठन द्वारा ही हो सकता है, नवीन जो मनुष्य को उन साधनों का मालिक बनाये जो उनको जीवन प्रदान करते है । अतएव समाजवाद व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन चाहता है ।

आचार्य जी के सामाजिक आन्दोलन का आर्थिक पक्ष :–

आचार्य नरेन्द्र देव का समाजवाद काल्पनिक समाजवाद अथवा समाजसुधारकों का समाजवाद नहीं था । वे वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्तकार, मनीषी और मीमांसक थे । वैज्ञानिक समाजवाद में न तो सुधारवाद है न काल्पनिक समाजवाद । यह समाज की एक ऐसी नवीन आर्थिक व्यवस्था प्रतिष्ठित करना चाहता है, जिसमें उत्पादन के साधन तथा उत्पन्न वस्तुओं का वितरण और विनिमय सरकार के हाथ में हो । वैज्ञानिक समाजवाद गरीबों की गरीबी दूर करना चाहता है न कि कुछ अमीरों से कुढ़कर उनको तबाह करना । एतदर्थ वैज्ञानिक समाजवाद का प्रारंभ मशीन युग में होता है । मशीन युग तथा उसमें पैदा होने वाला पूँजीवाद ही वैज्ञानिक समाजवाद

का जन्मदाता है । मशीन के माध्यम से जो औद्योगिक प्रगति हुई उसने यह सिद्ध कर दिया है कि संसार में विपन्नता, भूख और वस्तुओं का अभाव का कारण स्वल्पता नहीं बल्कि उत्पादन के साधनों पर कुछ मुट्ठी भर पूँजीपतियों की अधिकार सत्ता का होना है और यह उत्पादन समाज हित की अपेक्षा उनकी स्वार्थपूर्ति के लिए होता है । जब तक विभिन्न वर्गों में आर्थिक वैषम्य प्रतिष्ठित है तब तक सुखद जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है ।

आचार्य जी का मत था कि यदि हम मशीन युग के दोषों से मुक्ति पाना चाहते है तो उसका यह तरीका नहीं है कि हम अतीत की ओर देखे और औद्योगिक प्रगति को विनष्ट कर संसार की निर्धनता और उत्पीड़न को और बढ़ा दें । वैज्ञानिक समाजवाद ही इस आर्थिक विषमता का एक मात्रा रामबाण औषधि है । आज मानव को रोटी, कपड़ा, शांति और स्वतंत्रता सभी वांछनीय है, इनकी उपलब्धि एकमात्र सच्चे समाजवाद की स्थापना द्वारा ही सम्भव हो सकती है । मानव समाज का उद्धार सामाजिक शक्तियों के ऐसे नवीन संगठन द्वारा ही हो सकता है जो मनुष्य को उनके साधनों का मालिक बनावे जो उनको जीवन प्रदान करें। जब औद्योगिक व्यवसाय का संगठन समाज कल्याण के लिए होगा और उत्पादन के सम्पूर्ण साधनों पर व्यक्ति की अपेक्षा समाज का एकाधिकार होगा तो वैसी स्थिति में समाज वस्तुओं का उत्पादन अपनी आवष्कतानुसार ही करेगा उससे समाज के प्रत्येक सदस्य की शक्तियों का विकास के अवसर उपलब्ध हो जाऐंगे । उत्पादित वस्तुओं के वितरण एवं विनिमय का कार्य जब समाज द्वारा किया जायेगा तो समाज में अकिंचनता और अशान्ति नहीं रहेगी और परम संतोष होगा । आचार्य जी ने उत्पादन के साधनों को सामाजिक सम्पत्ति बनाये जाने पर जो दोष उत्पन्न होगा उस पर भी विचार किये थे । उन्हें भय था कि नौकरशाही की अधिकार सत्ता इससे बढ़ेगी । यह नहीं बढ़ सके इसके लिए उपाय करने होंगे, इसके लिए नियमों का निर्माण करना होगा जिससे जन–नियंत्रण उनपर रहे । औद्योगिक व्यवसाय के प्रबन्ध में एकमात्र राज्य के प्रभुत्व से ही आचार्य नरेन्द्र देव संतुष्ट नही थे, अपितु उन्होंने श्रमिक वर्ग को पर्याप्त भागीदार बनाये जाने पर बल दिया ।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः आचार्य नरेन्द्र देव जी के समाजवाद का अध्ययन करने के पश्चात, यह समझ बनती है कि उनकी समाजवाद कोई स्थूल सैद्धान्तिक नहीं था, वक्त और परिस्थिति के सापेक्ष लोककल्याण हेतु परिवर्तनीय था । वे वैज्ञानिक समाजवाद के पक्षधर थे और उनका मानना था कि समाज को अगर सुदृढ़ और सम्पन्न बनाना हो तो हमें समाज के विभिन्न वर्गों, किसान, मजदूर, कर्मकार तथा आखिरी पैदान पर बैठे लोगों को साथ लेकर चलना होगा और सभी की समाज में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी । आचार्य जी का समाजवाद में सामाजिक हिस्सेदारी के साथ–साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं आर्थिक समानता का भी चिंतन परिलक्षित होता है । उनके चिंतन में कृषकों, श्रमिकों और कमजोर वर्ग के लोगों के लिए व्यापक सामग्री उपलब्ध है । इस प्रकार आचार्य जी ने भारतीय समाजवाद को एक नई दशा एवं दिशा प्रदान किया ।

संदर्भ सूची :–

1. सोशलिज्म एण्ड नेशनल रेवोल्यूशन – आचार्य नरेन्द्र देव, संपाक–यूसुफ मेहर अली ।
2. 'नेशनल हेराल्ड', इंगलिश दैनिक, लखनऊ, 20 अप्रैल, 1970 ।
3. राष्ट्रीयता और समाजवाद – आचार्य नरेन्द्र देव ।
4. समाजवाद लक्ष्य तथा साधन – आचार्य नरेन्द्र देव
5. आचार्य नरेन्द्र देव – युग और नेतृत्व, प्रो0 मुकुटबिहारी लाल, आचार्य नरेन्द्र देव जी समाजवादी संस्थान, वाराणसी, 1970
6. साहित्य शिक्षा और संस्कृति, आचार्य नरेन्द्र देव (संपाक–रमेश चन्द्र तिवारी एवं कृष्ण नाथ) धार्मिक आंदोलन में एकता का आधार, काशी विद्यापीठ के निमित्त, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1998
7. आचार्य नरेन्द्र देव – एकेमेमोरेशन वाल्यूम, बी0 वी0 केलरकर एवं बी0 के0 एन0 मेनन (संपादक) नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नई दिल्ली, 1971
8. आचार्य नरेन्द्र देव – युग और विचार, जगदीश दीक्षित (संपादक) 'महानता और सदगुणों का संगम, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0 प्र0 (शासन)
9. नरेन्द्र देव – ए सेलेक्शन ऑफ हिम राईटिंग्स, अजय कुमार (संपादक) आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी, 1989
10. टुवर्डस सोशलिस्ट सोसाईटी, आचार्य नरेन्द्र देव (संपादक–ब्रह्मानंद), 'नीड फॉर विगरस फिलास्फी ऑफ लाईफ' (मूल इंगलिश)